परिसर प्रतिध्वनि

(नवोन्मेष, युवा ऊर्जा एवं अन्तःक्रिया का अभिव्यक्ति मंच)

मासिक भित्ति पत्रिका, अंक - 15, मार्च 2026

प्रधान संरक्षक	-	श्रीमती मीनाक्षी सुराना
प्रमुख संरक्षक	-	डॉ. प्रेम सुराना
मुख्य संरक्षक	-	डॉ. अंशु सुराना
प्रेसिडेंट (वाइस चांसलर)	-	प्रो. (डॉ.) रश्मि जैन
वरिष्ठ सलाहकार	-	प्रो. (डॉ.) अरविन्द कुमार अग्रवाल
प्रधान संपादक	-	प्रो. (डॉ.) अंकित गांधी
संपादक	-	डॉ. प्रेम कुमार
सह-संपादक	-	डॉ. मोनिका शर्मा, डॉ. भाग्यश्री खरे
खेल संपादक	-	श्री यश यादव

प्रेसिडेंट(वाइस चांसलर) महोदया का संदेश ...

यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर की मासिक भित्ति पत्रिका 'परिसर प्रतिध्वनि' के मार्च 2026 अंक के प्रकाशन पर मैं समस्त विश्वविद्यालय परिवार को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देती हूँ। मार्च का यह समय उपलब्धियों के मूल्यांकन, नए संकल्पों और भविष्य की दिशा निर्धारित करने का अवसर प्रदान करता है। मुझे प्रसन्नता है कि विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों द्वारा आयोजित संगोष्ठियाँ, शोध-परिचर्चाएँ, तकनीकी कार्यशालाएँ, नवाचार गतिविधियाँ तथा सामाजिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम निरंतर हमारे शैक्षणिक वातावरण को समृद्ध और सक्रिय बनाए हुए हैं। इस अंक में प्रस्तुत रिपोर्ट्स इन सभी प्रयासों का सजीव चित्र प्रस्तुत करती हैं और हमारे संस्थान की उत्कृष्टता के प्रति प्रतिबद्धता को स्पष्ट करती हैं। 'परिसर प्रतिध्वनि' केवल गतिविधियों का संकलन नहीं है, बल्कि यह सृजनात्मकता और वैचारिक अभिव्यक्ति का एक प्रभावी मंच है। यह पत्रिका विभिन्न विभागों के बीच समन्वय स्थापित करने के साथ-साथ सभी को एक साझा मंच पर जोड़ने का कार्य करती है। इससे न केवल परस्पर सीखने की संस्कृति विकसित होती है, बल्कि नवाचार और रचनात्मक सोच को भी प्रोत्साहन मिलता है। मेरा विश्वास है कि 'परिसर प्रतिध्वनि' भविष्य में भी इसी उत्साह, गुणवत्ता और समर्पण के साथ विश्वविद्यालय की उपलब्धियों, विचारों और रचनात्मक अभिव्यक्तियों को एक सशक्त मंच प्रदान करती रहेगी। इस अंक के सफल प्रकाशन हेतु संपादक मंडल, सभी विभागाध्यक्षों, संकाय सदस्यों, विद्यार्थियों, लेखकों एवं सहयोगियों को हार्दिक बधाई एवं धन्यवाद। आप सभी की सक्रिय सहभागिता ही इस पत्रिका की निरंतर प्रगति और प्रासंगिकता का आधार है। आप सभी के उज्ज्वल भविष्य, सतत उन्नति एवं सफलताओं के लिए मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ...

प्रो. (डॉ.) रश्मि जैन
प्रेसिडेंट (वाइस चांसलर)
यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर

कुलसचिव महोदय की कलम से...

यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर की मासिक भित्ति पत्रिका 'परिसर प्रतिध्वनि' के पंद्रहवें अंक (मार्च 2026) के प्रकाशन पर समस्त विश्वविद्यालय परिवार को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ। यह देखकर अत्यंत प्रसन्नता होती है कि विश्वविद्यालय के विभिन्न विभाग निरंतर शैक्षणिक उत्कृष्टता, शोध-परक गतिविधियों, कार्यशालाओं, संगोष्ठियों, सामाजिक अभियानों तथा सांस्कृतिक आयोजनों के माध्यम से परिसर को सक्रिय और समृद्ध बनाए हुए हैं। इस अंक में प्रस्तुत सुव्यवस्थित और तथ्यपरक रिपोर्ट्स न केवल इन गतिविधियों का विवरण देती हैं, बल्कि हमारे संस्थान की प्रगतिशील सोच और सामूहिक प्रयासों को भी प्रतिबिंबित करती हैं। 'परिसर प्रतिध्वनि' की विशेषता यह है कि यह पत्रिका विश्वविद्यालय के प्रत्येक वर्ग छात्रों, अध्यापकों एवं कर्मचारियों को अपनी साहित्यिक, सामाजिक और वैचारिक अभिव्यक्ति का सशक्त मंच प्रदान करती है। इस प्रकार की सहभागिता न केवल संवाद और समन्वय को सुदृढ़ करती है, बल्कि एक सकारात्मक और प्रेरणादायी शैक्षणिक वातावरण के निर्माण में भी सहायक होती है। कुलसचिव के रूप में मेरा दृढ़ विश्वास है कि किसी भी संस्थान की उन्नति पारदर्शिता, अनुशासन, समन्वय और सहभागिता पर आधारित होती है। 'परिसर प्रतिध्वनि' इन मूल्यों को साकार रूप देते हुए सभी को अपने विचार, अनुभव और उपलब्धियाँ साझा करने के लिए प्रेरित करती है। इस अंक के सफल प्रकाशन हेतु संपादक मंडल, सभी विभागों, रचनाकारों एवं सहयोगियों को हार्दिक बधाई एवं धन्यवाद। आप सभी का सतत सहयोग ही इस पत्रिका की गुणवत्ता और निरंतर प्रगति का आधार है।

डॉ. अनूप शर्मा
कुलसचिव
यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर

संपादकीय...

प्रिय पाठकों, सप्रेम नमस्कार

विश्वविद्यालय केवल ज्ञान का भंडार नहीं, बल्कि नवाचार, संवाद और सृजनशीलता का प्रेरक केंद्र होता है। यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर की मासिक भित्ति पत्रिका 'परिसर प्रतिध्वनि' का यह पंद्रहवाँ अंक मार्च 2026 में उसी जीवंत परंपरा को आगे बढ़ाते हुए आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए हमें हर्ष का अनुभव हो रहा है। मार्च का महीना नवपरिवर्तन, उपलब्धियों और आत्ममंथन का समय होता है। यह वह अवसर भी है जब हम अपने शैक्षणिक सत्र के अनुभवों को समेटते हुए नए लक्ष्यों की ओर अग्रसर होते हैं। बीते माह विश्वविद्यालय में आयोजित विविध शैक्षणिक गतिविधियाँ संगोष्ठियाँ, शोध-परिचर्चाएँ, तकनीकी कार्यशालाएँ, नवाचार प्रतियोगिताएँ तथा सामाजिक सरोकारों से जुड़े कार्यक्रम हमारे परिसर की गतिशीलता और प्रतिबद्धता को प्रतिबिंबित करते हैं। इस अंक में सम्मिलित आलेख और रिपोर्ट्स इन गतिविधियों का जीवंत दस्तावेज प्रस्तुत करते हैं, जो हमारे सामूहिक प्रयास और उत्कृष्टता की निरंतर यात्रा को दर्शाते हैं।

'परिसर प्रतिध्वनि' की विशिष्टता इसकी बहुआयामी प्रस्तुति में निहित है। यह पत्रिका न केवल शैक्षणिक और प्रशासनिक गतिविधियों का दर्पण है, बल्कि मानवीय संवेदनाओं, रचनात्मक अभिव्यक्तियों और वैचारिक समृद्धि की भी सशक्त वाहक है। विद्यार्थियों, संकाय सदस्यों एवं कर्मचारियों द्वारा प्रस्तुत कविताएँ, लेख, लघु-चिंतन और अनुभव-वृत्तांत इस अंक को सार्थकता और गहराई प्रदान करते हैं। वर्तमान तकनीकी युग में जहाँ सूचनाओं का प्रवाह तीव्र है, वहीं सार्थक संवाद और रचनात्मक सहभागिता का महत्व और भी बढ़ जाता है। यह पत्रिका विभिन्न विभागों के बीच एक सुदृढ़ सेतु का कार्य करते हुए विश्वविद्यालय परिवार को एक सूत्र में बाँधने का प्रयास करती है। मेरा दृढ़ विश्वास है कि यह सामूहिक मंच हम सभी को प्रेरणा, सकारात्मक ऊर्जा और नई दिशा प्रदान करता रहेगा। इस अंक के सफल प्रकाशन में सहयोग देने वाले सभी विभागाध्यक्षों, शिक्षकों, विद्यार्थियों, कर्मचारियों तथा रचनाकारों के प्रति मैं अपनी हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ। आप सभी की सक्रिय सहभागिता ही 'परिसर प्रतिध्वनि' को निरंतर समृद्ध और प्रभावशाली बनाती है। आइए, हम सब मिलकर ज्ञान, नवाचार और संवेदनशीलता की इस परंपरा को और अधिक सशक्त बनाएँ तथा अपने विश्वविद्यालय को नई उपलब्धियों की ऊँचाइयों तक पहुँचाएँ।

डॉ. प्रेम कुमार
सह-आचार्य, हिंदी विभाग
यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर

नोट:

आप सभी से विनम्र निवेदन है कि अपने बहुमूल्य सुझाव और प्रतिक्रियाएँ अवश्य प्रेषित करें, जिससे आगामी अंकों को और अधिक समृद्ध एवं उपयोगी बनाया जा सके।

अत्यंत उत्साह, गरिमा एवं सांस्कृतिक चेतना के साथ मनाया गया अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस

दिनांक 21 फरवरी 2026 को यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर में अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस अत्यंत उत्साह, गरिमा एवं सांस्कृतिक चेतना के साथ मनाया गया। गत वर्ष की अपेक्षा इस वर्ष समारोह को और अधिक व्यापक, सहभागी एवं वैचारिक रूप प्रदान किया गया। आयोजन का उद्देश्य विद्यार्थियों, प्राध्यापकों एवं कर्मचारियों में मातृभाषाओं के संरक्षण, संवर्धन एवं व्यावहारिक उपयोग के प्रति जागरूकता को सुदृढ़ करना तथा भाषाई विविधता के महत्व को रेखांकित करना था। कार्यक्रम का शुभारंभ प्रातः विश्वविद्यालय परिसर में सरस्वती वंदना एवं दीप प्रज्वलन के साथ हुआ। प्रारंभिक उद्बोधन में वक्ताओं ने यह स्पष्ट किया कि मातृभाषा केवल संप्रेषण का माध्यम नहीं, बल्कि हमारी सांस्कृतिक पहचान, सामाजिक चेतना और बौद्धिक विकास की मूल आधारशिला है। इस अवसर पर विश्वविद्यालय द्वारा विविध बौद्धिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों का आयोजन किया गया। भाषण एवं वाद-विवाद प्रतियोगिता, निबंध लेखन, काव्य-पाठ, लोकभाषा गायन, पोस्टर प्रस्तुति जैसे कार्यक्रमों में विद्यार्थियों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। भाषण एवं वाद-विवाद प्रतियोगिता में 'नई शिक्षा नीति और मातृभाषा', 'डिजिटल युग में भारतीय भाषाओं की संभावनाएँ', तथा 'भाषाई विविधता और राष्ट्रीय एकता' जैसे समसामयिक विषयों पर विचार प्रस्तुत किए गए। प्रतिभागियों ने तर्कसंगत विश्लेषण, भाषा की सशक्त अभिव्यक्ति एवं शोधपूर्ण दृष्टिकोण से निर्णायकों को प्रभावित किया।

निबंध लेखन प्रतियोगिता में विद्यार्थियों ने मातृभाषा को संवेदना, ज्ञान और संस्कारों की वाहक बताते हुए यह रेखांकित किया कि किसी भी राष्ट्र की उन्नति उसकी भाषाई जड़ों से जुड़ी होती है। काव्य-पाठ में विद्यार्थियों ने हिंदी सहित विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं में रचनाएँ प्रस्तुत कर भावपूर्ण वातावरण निर्मित किया। लोकभाषा गायन एवं सांस्कृतिक प्रस्तुतियों ने कार्यक्रम को विशेष रंग प्रदान किया। राजस्थान, हरियाणा, बिहार और अन्य राज्यों की लोकधुनों ने यह सिद्ध किया कि क्षेत्रीय भाषाएँ और बोलियाँ आज भी जनमानस में सजीव एवं प्रासंगिक हैं। नुक्कड़ नाटक के माध्यम से विद्यार्थियों ने मातृभाषा की उपेक्षा से उत्पन्न सामाजिक एवं सांस्कृतिक चुनौतियों को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया। नाटक का संदेश स्पष्ट था-"यदि भाषा सुरक्षित है, तो संस्कृति सुरक्षित है।" कार्यक्रम के मुख्य वक्ताओं में विश्वविद्यालय के वरिष्ठ

शिक्षकों ने अपने विचार व्यक्त किए। विश्वविद्यालय के उप-कुलाध्यक्ष डॉ. अंशु सुराना ने कहा- “मातृभाषा व्यक्ति को उसकी जड़ों से जोड़ती है और आत्मविश्वास को सशक्त बनाती है।” प्रेसिडेंट प्रोफेसर (डॉ.) रश्मि जैन ने अपने संबोधन में कहा- “मातृभाषा में शिक्षा विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास का आधार है।” प्रो-प्रेसिडेंट डॉ. अंकित गांधी ने वैश्विक संदर्भ में भारतीय भाषाओं की प्रासंगिकता पर प्रकाश डालते हुए कहा- “अंतरराष्ट्रीय भाषाओं के साथ-साथ अपनी मातृभाषाओं का सम्मान ही हमें वैश्विक मंच पर विशिष्ट पहचान दिला सकता है।” मानविकी विभागाध्यक्ष डॉ. सीता राम माली ने मातृभाषा को सांस्कृतिक स्मृति का आधार बताया। डॉ. प्रेम कुमार ने भाषा संरक्षण को सामाजिक दायित्व बताते हुए युवाओं को इसके प्रति सजग रहने का आह्वान किया। डॉ. जितेंद्र सिंह चौधरी ने विद्यार्थियों को प्रेरित करते हुए कहा कि आधुनिकता और परंपरा का संतुलन ही वास्तविक प्रगति का मार्ग है। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के समस्त प्राध्यापकगण, कर्मचारी एवं बड़ी संख्या में छात्र-छात्राएँ उपस्थित रहे। पूरे परिसर में भाषाई गौरव, सांस्कृतिक आत्मबोध एवं बौद्धिक संवाद का वातावरण व्याप्त रहा। इस प्रकार, वर्ष 2026 में यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर में मनाया गया मातृभाषा दिवस केवल एक औपचारिक उत्सव नहीं, बल्कि भाषाई चेतना, सांस्कृतिक अस्मिता और शैक्षणिक मूल्यों को सुदृढ़ करने वाला एक सार्थक एवं प्रेरणादायक आयोजन सिद्ध हुआ।

प्रेम, भाईचारे और आपसी सौहार्द का प्रतीक: होली

होली भारत का एक अत्यंत लोकप्रिय और उल्लासपूर्ण त्योहार है, जिसे ‘रंगोत्सव’ के नाम से भी जाना जाता है। यह पर्व हर वर्ष फाल्गुन मास की पूर्णिमा को मनाया जाता है। होली केवल रंगों का त्योहार नहीं, बल्कि प्रेम, भाईचारे और आपसी सौहार्द का प्रतीक भी है। इस दिन लोग अपने पुराने गिले-शिकवे भूलकर एक-दूसरे को गले लगाते हैं और खुशी-खुशी रंग लगाते हैं। होली का आरंभ होलिका दहन से होता है, जो बुराई पर अच्छाई की विजय का प्रतीक है। पौराणिक कथा के अनुसार, भक्त प्रह्लाद की रक्षा के लिए भगवान ने होलिका का दहन कराया था। इसी कारण इस दिन लोग अग्नि जलाकर पूजा करते हैं और बुराइयों को त्यागने का संकल्प लेते हैं। अगले दिन रंगों की होली खेली जाती है। लोग गुलाल, अबीर और रंग-बिरंगे पानी से एक-दूसरे को रंगते हैं। बच्चे, युवा और बुजुर्ग सभी इस उत्सव में पूरे उत्साह से भाग लेते हैं। ढोल-नगाड़ों की धुन, नृत्य और गीतों के साथ वातावरण आनंदमय हो जाता है। घरों में तरह-तरह के पकवान जैसे गुजिया, मालपुआ और ठंडाई बनाई जाती है, जो इस त्योहार की मिठास को और बढ़ा देती है। होली हमें यह संदेश देती है कि जीवन में प्रेम और एकता का महत्व सबसे अधिक है। यह त्योहार सामाजिक भेदभाव को मिटाकर सभी को एक रंग में रंग देता है। आज के समय में, हमें होली को पर्यावरण के अनुकूल और सुरक्षित तरीके से मनाना चाहिए, जैसे प्राकृतिक रंगों का उपयोग करना और पानी की बचत करना। अंत में, होली केवल रंगों का खेल नहीं, बल्कि खुशियों, उमंग और आपसी सद्भाव का अनमोल पर्व है, जो हर किसी के जीवन में नई ऊर्जा और उत्साह भर देता है।

डॉ. प्रेम कुमार
सह-आचार्य, हिंदी विभाग
यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर

राजस्थान विज्ञान महोत्सव में निभाई सक्रिय सहभागिता

यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर के छात्र-छात्राओं ने एमएनआईटी जयपुर (Malaviya National Institute of Technology, Jaipur) में आयोजित तीन दिवसीय राजस्थान विज्ञान महोत्सव में सक्रिय एवं प्रभावशाली सहभागिता दर्ज करवाई। यह महोत्सव 26 से 28 फरवरी 2026 तक विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग राजस्थान एवं एमएनआईटी जयपुर के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित किया गया। इस वर्ष महोत्सव की थीम 'विज्ञान में महिलाएं: विकसित भारत को उत्प्रेरित करना' रही, जिसका उद्देश्य वैज्ञानिक सोच को बढ़ावा देना तथा विशेष रूप से युवा महिलाओं को विज्ञान, नवाचार एवं स्टार्टअप्स के क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करना था।

महोत्सव के दौरान आयोजित वैज्ञानिक प्रदर्शनी, तकनीकी प्रस्तुतियों, डीएनए निष्कर्षण जैसे प्रयोगात्मक सत्रों तथा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी नीति पर चर्चाओं में यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर के विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। विद्यार्थियों की प्रतिभा और नवाचार को सराहा गया तथा उन्हें विभिन्न गतिविधियों में उत्कृष्ट प्रदर्शन हेतु प्रशंसा प्राप्त हुई। इस अवसर पर यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर की प्रेसिडेंट प्रोफेसर (डॉ.) रश्मि जैन ने कहा- "ऐसे विज्ञान महोत्सव विद्यार्थियों के भीतर जिज्ञासा और नवाचार की भावना को प्रोत्साहित करते हैं। हमें गर्व है कि हमारे विद्यार्थियों ने इस मंच पर अपनी प्रतिभा का उत्कृष्ट प्रदर्शन किया।" प्रो -प्रेसिडेंट प्रो-प्रेसिडेंट डॉ. अंकित गांधी ने अपने वक्तव्य में कहा- "विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में युवाओं, विशेषकर महिलाओं की भागीदारी बढ़ाना समय की आवश्यकता है। यह महोत्सव 'विकसित भारत' के लक्ष्य की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।" बेसिक एंड अप्लाइड साइंस विद्यापीठ की अधिष्ठाता, डॉ. रजनी माथुर ने कहा- "हमारे विद्यार्थियों ने न केवल तकनीकी दक्षता दिखाई, बल्कि वैज्ञानिक दृष्टिकोण और टीमवर्क का भी उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत किया। इस प्रकार के आयोजन उनके समग्र विकास में अत्यंत सहायक होते हैं।" यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर भविष्य में भी ऐसे राष्ट्रीय स्तर के आयोजनों में सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करते हुए विद्यार्थियों को अनुसंधान, नवाचार और वैज्ञानिक उत्कृष्टता की दिशा में प्रेरित करती रहेगी।

माननीय चेयरमैन डॉ. प्रेम सुराना जी 'इंडिया प्राइड अवॉर्ड्स 2025–26 से हुए सम्मानित

दिनांक 06 मार्च 2026 को शिक्षा, कला एवं सामाजिक सेवा के क्षेत्र में अपने उत्कृष्ट योगदान के लिए दीपशिखा कला संस्थान के संस्थापक एवं चेयरमैन डॉ. प्रेम सुराना को प्रतिष्ठित 'इंडिया प्राइड अवॉर्ड्स 2025–26' से सम्मानित किया गया है। यह सम्मान उनके दूरदर्शी नेतृत्व, समाज के प्रति समर्पण और शिक्षा के क्षेत्र में उनके अमूल्य योगदान की पहचान के रूप में प्रदान किया गया है। डॉ. प्रेम सुराना लंबे समय से शिक्षा और कला के क्षेत्र में सक्रिय रहते हुए समाज को नई दिशा देने का कार्य कर रहे हैं। उन्होंने दीपशिखा कला संस्थान की स्थापना इस उद्देश्य से की थी कि विद्यार्थियों को न केवल गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिले, बल्कि उनमें नैतिक मूल्यों, रचनात्मकता और सामाजिक जिम्मेदारी की भावना भी विकसित हो। उनके मार्गदर्शन में संस्थान ने अल्प समय में ही एक विशेष पहचान बनाई है। अपने इसी सपने को व्यापक स्तर पर साकार करने के लिए उन्होंने वर्ष 2017 में यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर की स्थापना की, और आज यह विश्वविद्यालय भी शिक्षा के क्षेत्र में नित नए आयाम हासिल कर रहा है। डॉ. सुराना का मानना है कि शिक्षा केवल पुस्तकों तक सीमित नहीं होनी चाहिए, बल्कि यह व्यक्ति के संपूर्ण व्यक्तित्व के विकास का माध्यम बननी चाहिए। इसी सोच के साथ उन्होंने संस्थान में विभिन्न शैक्षणिक, सांस्कृतिक और सामाजिक गतिविधियों को बढ़ावा दिया। उनके प्रयासों से विद्यार्थियों को अपनी प्रतिभा निखारने के अनेक अवसर प्राप्त हुए हैं, जिससे वे राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बना रहे हैं।

समाज सेवा के क्षेत्र में भी डॉ. सुराना का योगदान अत्यंत सराहनीय रहा है। उनके नेतृत्व में संस्थान द्वारा समय-समय पर जागरूकता अभियान, पर्यावरण संरक्षण कार्यक्रम, रक्तदान शिविर, गरीब एवं जरूरतमंद लोगों की सहायता जैसे अनेक जनहितकारी कार्य किए गए हैं। इन पहलों ने समाज में सकारात्मक बदलाव लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। 'इंडिया प्राइड अवॉर्ड्स 2025–26' से सम्मानित होना न केवल डॉ. सुराना के व्यक्तिगत प्रयासों की सराहना है, बल्कि यह पूरे संस्थान और क्षेत्र के लिए गर्व का विषय भी है। इस उपलब्धि ने संस्थान के सभी सदस्यों शिक्षकों, विद्यार्थियों और कर्मचारियों को और अधिक प्रेरित किया है। इस अवसर पर यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर की प्रेसिडेंट प्रोफेसर (डॉ.) रश्मि जैन, प्रो-प्रेसिडेंट डॉ. अंकित गांधी, कुलसचिव डॉ. अनूप शर्मा सहित सभी ने डॉ. सुराना को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ दीं और उनके नेतृत्व में संस्थान के उज्ज्वल भविष्य की कामना की। संस्थान में हर्ष और उत्सव का माहौल देखने को मिला। कई गणमान्य व्यक्तियों और शिक्षाविदों ने भी इस उपलब्धि पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि डॉ. सुराना जैसे व्यक्तित्व समाज के लिए प्रेरणा स्रोत हैं। डॉ. सुराना ने इस सम्मान को अपनी टीम, विद्यार्थियों और समाज के सहयोग का परिणाम बताते हुए कहा कि यह पुरस्कार उन्हें और अधिक जिम्मेदारी के साथ कार्य करने के लिए प्रेरित करेगा। उन्होंने आगे भी शिक्षा और समाज सेवा के क्षेत्र में नए आयाम स्थापित करने का संकल्प व्यक्त किया।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर महिला सशक्तिकरण कार्यक्रम आयोजित

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर दिनांक 09 मार्च 2026 को यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर में महिला सशक्तिकरण को समर्पित एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य समाज में महिलाओं की भूमिका, उपलब्धियों और उनके अधिकारों के प्रति जागरूकता बढ़ाना था। कार्यक्रम की शुरुआत विश्वविद्यालय की प्रेसिडेंट प्रोफ़ेसर (डॉ.) रश्मि जैन एवं मुख्य अतिथि श्रीमती उमा शर्मा (पूर्व सरपंच, कुम्हारियावास) द्वारा दीप प्रज्वलन के साथ हुई। कार्यक्रम के प्रारंभ में विश्वविद्यालय प्रेसिडेंट डॉ. रश्मि जैन ने महिला दिवस की उपयोगिता एवं इसकी प्रासंगिकता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि- "महिलाएँ किसी भी समाज की रीढ़ होती हैं। महिलाएँ वह शक्ति हैं जो न केवल परिवारों को जोड़े रखती हैं, बल्कि समाज को सकारात्मक दिशा देने का साहस भी रखती हैं।" उन्होंने कहा कि रानी लक्ष्मीबाई, सावित्रीबाई फुले, सरोजिनी नायडू और कल्पना चावला जैसी महान महिलाओं के जीवन से हमें प्रेरणा मिलती है कि यदि महिला ठान ले तो वह हर ऊँचाई प्राप्त कर सकती है। उन्होंने सभी से समावेशी समाज के निर्माण के लिए बेटियों को बड़े सपने देखने और उन्हें पूरा करने के लिए प्रोत्साहित करने का आह्वान किया।

इस अवसर पर डॉ. मोनिका शर्मा, अधिष्ठाता, विधि विद्यापीठ ने महिलाओं के प्रति होने वाली विभिन्न प्रकार की हिंसा पर प्रकाश डालते हुए उनकी सुरक्षा के लिए बनाए गए कानूनों की जानकारी दी। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि श्रीमती उमा शर्मा (पूर्व सरपंच, कुम्हारियावास) ने कहा कि आज महिलाएँ हर क्षेत्र में आगे बढ़ रही हैं और समाज के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। उन्होंने कहा कि महिलाओं को शिक्षा, सम्मान और समान अवसर मिलना अत्यंत आवश्यक है, तभी समाज और देश की वास्तविक प्रगति संभव है। उन्होंने महिलाओं को आत्मनिर्भर बनने और अपने अधिकारों के प्रति जागरूक रहने का संदेश दिया। इस अवसर पर छात्राओं द्वारा भाषण एवं कविता पाठ प्रस्तुत किए गए, जिन्होंने कार्यक्रम को और भी आकर्षक बना दिया। साथ ही महिलाओं के अधिकार, सुरक्षा और समानता जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा भी की गई। विश्वविद्यालय के प्रो-प्रेसिडेंट डॉ. अंकित गांधी, कुलसचिव डॉ. अनूप शर्मा एवं परीक्षा नियंत्रक डॉ. कमल किशोर जांगिड़ ने भी अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर सभी को शुभकामनाएँ प्रेषित की | विश्वविद्यालय के चेयरमेन डॉ. प्रेम सुराना ने अपने संदेश में कहा कि महिलाओं को समान अवसर और सम्मान देकर ही समाज और देश का समग्र विकास संभव है। कार्यक्रम का संचालन डॉ. वंदना सिंह ठाकुर ने किया तथा सह-संचालन डॉ. सीताराम माली एवं डॉ. रजनी माथुर द्वारा किया गया।

यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर में कृषि विभाग की भव्य फ्रेशर्स पार्टी का आयोजन

यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी में कृषि विभाग के विद्यार्थियों के स्वागत हेतु भव्य फ्रेशर्स पार्टी का आयोजन अत्यंत धूमधाम से किया गया। विश्वविद्यालय के ऑडिटोरियम में आयोजित इस शानदार कार्यक्रम में छात्रों ने उत्साहपूर्वक भाग लेते हुए विभिन्न रंगारंग प्रस्तुतियों से समां बांध दिया। पूरे वातावरण में उल्लास, उमंग और नए आरंभ की सकारात्मक ऊर्जा स्पष्ट रूप से दिखाई दे रही थी। कार्यक्रम का शुभारंभ विश्वविद्यालय की प्रेसिडेंट डॉ. रश्मि जैन द्वारा दीप प्रज्ज्वलन के साथ किया गया। अपने स्वागत संबोधन में उन्होंने नवागंतुक विद्यार्थियों के जोश और आत्मविश्वास की सराहना करते हुए उन्हें परिश्रम, अनुशासन और नैतिक मूल्यों के साथ आगे बढ़ने की प्रेरणा दी तथा उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं प्रदान कीं। फ्रेशर्स पार्टी के अंतर्गत छात्रों ने नृत्य, समूह एवं एकल गीत, स्टैंड-अप कॉमेडी तथा आकर्षक फैशन शो जैसी सांस्कृतिक प्रस्तुतियों से सभी का मन मोह लिया। कार्यक्रम का उद्देश्य नए विद्यार्थियों को विश्वविद्यालय परिवार से जोड़ना और उनमें आत्मीयता की भावना विकसित करना था। कृषि विभाग के अधिष्ठाता ने अपने संबोधन में कहा कि यह आयोजन विद्यार्थियों के मध्य आपसी सामंजस्य और सहयोग की भावना को सुदृढ़ करने के लिए किया गया है, जिससे वे सीनियर्स और जूनियर्स के साथ सहज रूप से जुड़ सकें।

उप-कुलसचिव श्री नरेश अरोड़ा ने छात्रों का उत्साहवर्धन करते हुए एंटी रैगिंग कमेटी सहित विभिन्न समितियों की जानकारी साझा की और विद्यार्थियों को विश्वविद्यालय की नीतियों एवं सुविधाओं से अवगत कराया। प्रो-चेयरपर्सन डॉ. अंशु सुराना ने अपने संदेश में कहा कि फ्रेशर्स पार्टी केवल मनोरंजन का मंच नहीं, बल्कि यह विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास, आत्मविश्वास निर्माण और नेतृत्व क्षमता को निखारने का एक सशक्त अवसर है। उन्होंने सभी नए छात्रों को सकारात्मक सोच के साथ शैक्षणिक एवं सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी के लिए प्रेरित किया और उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। कुलसचिव डॉ. अनूप शर्मा ने भी अपने संदेश के माध्यम से नवप्रवेशित विद्यार्थियों को हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित कीं। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए सदैव प्रतिबद्ध है। उन्होंने सभी छात्रों से अनुशासन, परिश्रम एवं सकारात्मक दृष्टिकोण के साथ अपने शैक्षणिक जीवन की शुरुआत करने का आह्वान किया तथा उनके उज्ज्वल एवं सफल भविष्य की कामना की। आयुषी चौधरी को मिस फ्रेशर एवं राजेश कुमावत को मिस्टर फ्रेशर घोषित किया गया इसके पश्चात उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों को पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया गया।

तीन दिवसीय शोध कार्यशाला का सफ़ल आयोजन

दिनांक 23-25 फरवरी 2026 को यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर के शोध विभाग द्वारा आंतरिक गुणवत्ता एवं आश्वासन प्रकोष्ठ के सहयोग से तीन दिवसीय शोध कार्यशाला का सफल आयोजन किया गया। इस कार्यशाला का उद्देश्य संकाय सदस्यों एवं शोधार्थियों में शोध अभिरुचि को बढ़ावा देना, गुणवत्तापूर्ण शोध प्रकाशन को प्रोत्साहित करना तथा सांख्यिकीय एवं विश्लेषणात्मक कौशल को सुदृढ़ करना था।

शोध कार्यशाला का आयोजन प्रेसिडेंट डॉ. रश्मि जैन तथा प्रो-प्रेसिडेंट डॉ. अंकित गांधी के मार्गदर्शन में संपन्न हुआ। उद्घाटन सत्र में नैतिक शोध पद्धतियों, नवाचार एवं अंतःविषय सहयोग के महत्व पर प्रकाश डाला गया। कार्यक्रम का समन्वयन आईक्यूएसी समन्वयक डॉ. रजनी माथुर द्वारा किया गया तथा उप-कुलसचिव (शोध) डॉ. भाग्यश्री खरे ने व्यवस्थाओं का संचालन सुनिश्चित किया। प्रथम दिवस में गुणवत्तापूर्ण शोध की आधारभूत अवधारणाओं पर केंद्रित सत्र आयोजित किए गए। डॉ. मंजू सिंह (प्रोफेसर, मालवीय नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर) एवं डॉ. पियूषा मजूमदार (एसोसिएट प्रोफेसर, आईआईएचएमआर यूनिवर्सिटी) ने मार्गदर्शन प्रदान किया।

द्वितीय दिवस डेटा विश्लेषण एवं अकादमिक लेखन पर केंद्रित रहा। डॉ. क्षिप्रा जैन (राजस्थान विश्वविद्यालय) ने सांख्यिकीय तकनीकों एवं डेटा व्याख्या की जानकारी दी। डॉ. मोनू भार्गव (पूर्णिमा विश्वविद्यालय, जयपुर) ने उद्धरण शैली, संदर्भन एवं प्लेगरिज़्म नियंत्रण पर व्याख्यान दिया। तृतीय दिवस प्रभावशाली शोध लेखन, प्रकाशन रणनीति एवं शोध नैतिकता पर केंद्रित रहा। डॉ. दीपक कुमार गुप्ता (विशेषज्ञ सांख्यिकीविद् एवं शोध सलाहकार) ने प्रभावशाली शोध लेखन एवं प्रकाशन रणनीति पर मार्गदर्शन दिया। डॉ. रोहित जैन (फाउंडर एवं डायरेक्टर, ट्रेड इनोवेशन सर्विसेज प्रा. लिमिटेड, जयपुर) ने शोध नैतिकता, बौद्धिक संपदा अधिकार एवं जिम्मेदार शोध व्यवहार पर प्रकाश डाला। समापन अवसर पर धन्यवाद ज्ञापन डॉ. चारु दुबे द्वारा प्रस्तुत किया गया। कार्यशाला के अंत में संवादात्मक सत्र आयोजित किया गया, जिसमें प्रतिभागियों ने अपने अनुभव साझा किए। यह कार्यशाला विश्वविद्यालय में सुदृढ़ एवं गुणवत्ता आधारित शोध संस्कृति के निर्माण की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल सिद्ध हुई।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस 2026: समानता, सशक्तिकरण और नई संभावनाएँ

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस हर वर्ष 8 मार्च को पूरे विश्व में मनाया जाता है। वर्ष 2026 का यह दिवस महिलाओं की उपलब्धियों का सम्मान करने, उनके अधिकारों के प्रति जागरूकता बढ़ाने और लैंगिक समानता को बढ़ावा देने का एक महत्वपूर्ण अवसर है। यह दिन केवल उत्सव का नहीं, बल्कि समाज में मौजूद असमानताओं पर विचार करने और उन्हें दूर करने के लिए ठोस कदम उठाने का भी समय है। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस का इतिहास महिलाओं के संघर्ष, त्याग और साहस से जुड़ा हुआ है। यह दिन हमें याद दिलाता है कि महिलाओं ने शिक्षा, विज्ञान, राजनीति, कला, खेल और हर क्षेत्र में अपनी पहचान बनाई है, बावजूद इसके कि उन्हें कई बाधाओं का सामना करना पड़ा। 2026 में भी यह दिवस इस संदेश को मजबूत करता है कि महिलाओं को समान अवसर और सम्मान मिलना चाहिए।

2026 की थीम और उसका संदेश: हर वर्ष महिला दिवस एक विशेष थीम के साथ मनाया जाता है, जो समाज को एक दिशा देने का काम करती है। 2026 की थीम (यदि घोषित हो) महिलाओं के सशक्तिकरण, समान अधिकार और नेतृत्व में उनकी भागीदारी को बढ़ाने पर केंद्रित हो सकती है। यह थीम हमें प्रेरित करती है कि हम एक ऐसे समाज का निर्माण करें जहां महिलाओं को स्वतंत्रता, सुरक्षा और सम्मान मिले।

महिलाओं की वर्तमान स्थिति: आज की महिलाएं हर क्षेत्र में आगे बढ़ रही हैं। वे न केवल अपने परिवार की जिम्मेदारियां निभा रही हैं, बल्कि देश और समाज के विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं। हालांकि, अभी भी कई जगहों पर महिलाओं को भेदभाव, हिंसा और असमान अवसरों का सामना करना पड़ता है। इन समस्याओं को खत्म करने के लिए समाज के हर वर्ग को मिलकर काम करना होगा। सशक्तिकरण की दिशा में कदम:: महिला सशक्तिकरण के लिए शिक्षा सबसे महत्वपूर्ण साधन है। इसके अलावा, आर्थिक स्वतंत्रता, स्वास्थ्य सुविधाएं और कानूनी अधिकारों की जानकारी भी आवश्यक है। सरकार, सामाजिक संस्थाएं और नागरिक मिलकर महिलाओं के लिए सुरक्षित और सहयोगी वातावरण बना सकते हैं। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस 2026 हमें यह सोचने का अवसर देता है कि हमने अब तक क्या हासिल किया है और आगे क्या करना बाकी है। यह दिन हमें प्रेरित करता है कि हम महिलाओं के सम्मान, अधिकार और समानता के लिए निरंतर प्रयास करें। जब महिलाएं सशक्त होंगी, तभी समाज और राष्ट्र का वास्तविक विकास संभव होगा। आइए, इस महिला दिवस पर हम सभी यह संकल्प लें कि हम एक समान और न्यायपूर्ण समाज के निर्माण में अपना योगदान देंगे।

श्री नरेश अरोड़ा
उप-कुलसचिव
यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर

दो दिवसीय सतत पुनर्वास शिक्षा (CRE) कार्यक्रम का सफल आयोजन

यूनिवर्सिटी ऑफ़ टेक्नोलॉजी, जयपुर के विशेष शिक्षा विभाग में अधिष्ठाता डॉ. वंदना सिंह ठाकुर की अध्यक्षता में दिनांक 12 एवं 13 मार्च 2026 को दो दिवसीय सतत पुनर्वास शिक्षा(Continuing Rehabilitation Education) कार्यक्रम का सफल आयोजन किया गया। कार्यक्रम का विषय 'विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए क्रियात्मक शैक्षणिक शिक्षा' रखा गया, जिसका उद्देश्य विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए जीवनोपयोगी शैक्षणिक कौशलों को समझना एवं विकसित करना था। कार्यक्रम के प्रथम दिवस 12 मार्च 2026 को पंजीकरण प्रक्रिया के पश्चात कार्यक्रम का शुभारंभ प्रेसिडेंट प्रोफ़ेसर (डॉ.) रश्मि जैन, प्रो- प्रेसिडेंट डॉ. अंकित गांधी, अधिष्ठाता डॉ. वंदना सिंह ठाकुर तथा विशेष शिक्षा विभाग के अध्यापकगणों द्वारा दीप प्रज्ज्वलन के साथ किया गया। इसके उपरांत डॉ. वंदना सिंह ठाकुर ने अपने स्वागत भाषण में सतत पुनर्वास शिक्षा(CRE) कार्यक्रम के उद्देश्यों एवं महत्व से प्रतिभागियों को अवगत कराया।

कार्यक्रम में विभिन्न रिसोर्स पर्सन द्वारा विषय से संबंधित महत्वपूर्ण व्याख्यान एवं प्रस्तुतियाँ दी गईं, जिनमें मनीष कुमार मीणा, हसन दीन खान, राघवेंद्र यादव, भावना रावत, डॉ. नवनीता नहाटा एवं डॉ. स्नेहलता शर्मा शामिल रहे। प्रथम सत्र के दौरान RCI द्वारा वीडियो कॉल के माध्यम से कार्यक्रम की जानकारी ली गई, जिसमें प्रतिभागियों से भी संवाद स्थापित किया गया तथा कौशल आधारित गतिविधियों का भी आयोजन किया गया। प्रथम दिवस के अंत में अतिथि वक्ताओं को स्मृति-चिन्ह प्रदान कर प्रथम दिवस का समापन किया गया। कार्यक्रम के द्वितीय दिवस 13 मार्च 2026 को भी कार्यक्रम की शुरुआत डॉ. वंदना सिंह ठाकुर के प्रेरणादायक उद्बोधन से हुई। इस दिन गीता रानी, डॉ. माया बोहरा, डॉ. अनीता शर्मा, डॉ. पी. रामकृष्ण एवं धीरज कुमार नागर द्वारा विषय से संबंधित प्रभावी प्रस्तुतियाँ दी गई। प्रतिभागियों के लिए विभिन्न शिक्षण-अधिगम गतिविधियों का आयोजन किया गया, जिससे कार्यक्रम अत्यंत रोचक एवं ज्ञानवर्धक बना।

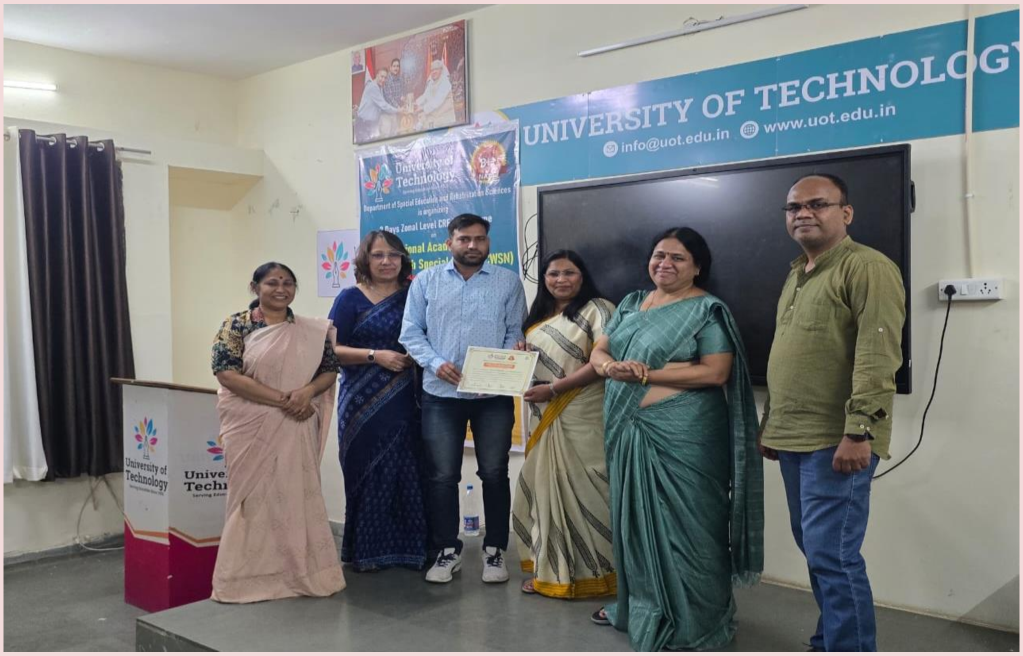

इस अवसर पर प्रो-प्रेसिडेंट डॉ. अंकित गांधी ने कहा कि क्रियात्मक शैक्षणिक शिक्षा का उद्देश्य विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को ऐसे शैक्षणिक कौशल प्रदान करना है जो उनके दैनिक जीवन में उपयोगी हों तथा उन्हें अधिक आत्मनिर्भर बना सकें। यह शिक्षा बच्चों को जीवन से जोड़ती है, जिससे वे अपनी क्षमताओं के अनुसार समाज में सक्रिय और सम्मानजनक जीवन जी सकें। इसके साथ ही डॉ. अंकित गांधी ने डॉ. वंदना सिंह ठाकुर, आमंत्रित रिसोर्स पर्सन, अध्यापकगण व विद्यार्थियों को कार्यक्रम की सफलता हेतु धन्यवाद ज्ञापन किया, वहीं प्रेसिडेंट डॉ. रश्मि जैन ने कार्यक्रम की सराहना करते हुए कहा कि इस प्रकार के कार्यक्रम विद्यार्थियों में कौशलात्मक क्षमता के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। क्रियात्मक शैक्षणिक शिक्षा का उद्देश्य बच्चों को केवल पुस्तकीय ज्ञान देना नहीं, बल्कि उन्हें ऐसे व्यावहारिक कौशल सिखाना है जो उनके दैनिक जीवन को अधिक स्वतंत्र और आत्मनिर्भर बना सकें। प्रो-चेयरपर्सन डॉ. अंशु सुराना ने भी कार्यक्रम की प्रशंसा करते हुए कहा कि- “इस विषय पर साझा किए गए विचार विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के सर्वांगीण विकास में अत्यंत उपयोगी सिद्ध होंगे। ऐसी शिक्षा बच्चों की व्यक्तिगत आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए उन्हें आत्मविश्वास, स्वावलंबन और समाज में सक्रिय भागीदारी के लिए प्रेरित करती है।” द्वितीय दिवस के अंत में सभी प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र वितरित किए गए तथा अतिथि वक्ताओं को यूनिवर्सिटी ऑफ़ टेक्नोलॉजी की ओर से स्मृति-चिन्ह भेंट किए गए। कार्यक्रम के सफल आयोजन में विशेष शिक्षा विभाग के अध्यापकगण धीरज कुमार नागर, श्रीमती सीमा चौधरी, गीता रानी, हसन दीन खान, मनीष कुमार मीणा एवं भावना रावत का योगदान सराहनीय रहा। अंत में डॉ. वंदना सिंह ठाकुर ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत करते हुए चेयरपर्सन डॉ. प्रेम सुराना, प्रो-चेयरपर्सन डॉ. अंशु सुराना, प्रेसिडेंट डॉ. रश्मि जैन, प्रो प्रेसिडेंट डॉ. अंकित गांधी, कुलसचिव डॉ. अनूप शर्मा, परीक्षा नियंत्रक डॉ. कमल किशोर जांगिड़, सभी वक्ताओं, अध्यापकगणों एवं प्रतिभागियों का आभार व्यक्त किया। इस प्रकार “विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए क्रियात्मक शैक्षणिक शिक्षा” विषय पर आयोजित दो दिवसीय CRE कार्यक्रम का सफल एवं गरिमामय समापन हुआ।